6A

मूंग की लाभकारी खेती

राजसिंह एवं शैलेन्द्र कुमार

2012

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान

(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

जोधपुर 342 003, राजस्थान

रूप में यह रोग दिखाई देता है। यह रोग एक मक्खी के कारण फैलता है। इसके नियंत्रण हेतु मिथाइल डिमेटॉन 0.25 प्रतिशत व मैलाथियोन 0.1 प्रतिशत मात्रा को मिलाकर प्रति हैक्टेयर की दर से 10 दिनों के अन्तराल पर घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये। डायमिथोएट 30 ई.सी. की आधा लीटर मात्रा का प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करना काफी प्रभावी होता है।

तना झुलसा रोग– इस रोग की रोकथाम हेतु 2 ग्राम मैन्कोजेब से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बुवाई करनी चाहिये। बुवाई के 30–35 दिन बाद 2 किलो मैन्कोजेब प्रति हैक्टेयर की दर से 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।

पीलिया रोग:– इस रोग के कारण फसल की पत्तियों में पीलापन दिखाई देता है। इस रोग के नियंत्रण हेतु 1 प्रतिशत गन्धक का तेजाब या 0.5 प्रतिशत फैरस सल्फेट का छिड़काव करना चाहिये।

सरकोस्पोरा पत्ती धब्बा:– इस रोग के कारण पौधो के ऊपर छोटे गोल बैंगनी लाल रंग के धब्बे दिखाई देते हैं पौधों की पत्तियां, जड़ें व अन्य भाग भी सूखने लगते हैं। इसके नियंत्रण हेतु कार्बेन्डाजिम की 1 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी में या डाइथेन एम–45 की 2 किलो मात्रा 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये। बीज को 3 ग्राम कैप्टान या 2 ग्राम कार्बेन्डोजिम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बोना चाहिये।

किकंल विषाणु रोग:– इस रोग के कारण पौधे की पत्तियां सिकुड कर इक्ट्ठी सी हो जाती है तथा पौधे पर फलियां बहुत ही कम बनती हैं। इसकी रोकथाम हेतु डाइमिथोएट 30 ई.सी. आधा लीटर अथवा मिथाइल डिमेटन 25 ई.सी. 750 मि.ली. प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिये। जरूरत पड़ने पर 15 दिन बाद दोबारा छिड़काव करना चाहिये।

जीवाणु पत्ती धब्बा, फफूंदी पत्ती धब्बा और विषाणु रोग:– इन रोगों की रोकथाम के लिए कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम, स्ट्रेप्टोसाइक्लिन की 0.1 ग्राम एवं मिथाइल डेमेटांन 25 ई.सी. की एक मिली. मात्रा को प्रति लीटर पानी में एक साथ मिलाकर पर्णीय छिड़काव करना चाहिये।

फसल चक्र

अच्छी पैदावार प्राप्त करने एवं भूमि की उर्वराशक्ति बनाये रखने हेतु उचित फसल चक्र आवश्यक है। वर्षा आधारित खेती के

लिए मूंग–बाजरा तथा सिचिंत क्षेत्रों में मूंग–गेहूं/जीरा/सरसों फसल चक्र अपनाना चाहिये।

बीज उत्पादन

मूंग के बीज उत्पादन हेतु ऐसे खेत चुनने चाहिये जिनमें पिछले मौसम में मूंग नहीं उगाया गया हो। मूंग के लिए निकटवर्ती खेतों से संदूषण को रोकने के लिए फसल के चारों तरफ 10 मीटर की दूरी तक मूंग का दूसरा खेत नहीं होना चाहिये। भूमि की अच्छी तैयारी, उचित खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग, खरपतवार, कीडे एवं बिमारियों के नियत्रंण के साथ साथ समय समय पर अवांछनीय पौधो को निकालते रहना चाहिये तथा फसल पकने पर लाटे को अलग सूखाकर दाना निकाल कर ग्रेडिंग कर लेना चाहिये। बीज में नमी 8–9 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिये। बीज को साफ करके उपचारित कर सूखे स्थान में रख देना चाहिये। इस प्रकार पैदा किये गये बीज को अगले वर्ष बुवाई के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

कटाई एवं गहाई

मूंग की फलियां जब काली पड़ने लगें तथा पौधा सूख जाये तो फसल की कटाई कर लेनी चाहिये। अधिक सूखने पर फलियां चिटकने का डर रहता है। फलियों से बीज को थ्रैसर द्वारा या डंडे द्वारा अलग कर लिया जाता है।

उपज एवं आर्थिक लाभ

उचित विधियों के प्रयोग द्वारा खेती करने पर मूंग की 7–8 कुन्तल प्रति हैक्टेयर वर्षा आधारित फसल से उपज प्राप्त हो जाती है। एक हैक्टयेर क्षेत्र में मूंग की खेती करने के लिए 18–20 हजार रुपये का खर्च आ जाता है। मूंग का भाव 40 रु. प्रति किलो होने पर 12000/– से 14000/– रूपये प्रति हैक्टेयर शुद्ध लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

प्रकाशक : निदेशक, केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर 342 003
सम्पर्क सूत्र : दूरभाष +91–291–2786584 (कार्यालय)
+91–291–2788484 (निवास), फैक्सः +91–291–2788706
ई–मेल : director@cazri.res.in
वेबसाईट : http://www.cazri.res.in
सम्पादन समिति : एम.पी. सिंह, आर.एस. त्रिपाठी, बी.के. माथुर, एम.पी. राजोरा एवं एस. रॉय

काजरी किसान हेल्प लाईन : 0291–2786812

Evergreen 94141 28647

मूंग राजस्थान में खरीफ ऋतु में उगायी जाने वाली महत्वपूर्ण दलहनी फसल है। राज्य में इसकी खेती 12 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में की जाती है। राज्य में मूंग के सकल क्षेत्रफल का 70 प्रतिशत शुष्क क्षेत्र में पाया जाता है। लेकिन क्षेत्र में मूंग की औसत उपज काफी कम है। निम्न उन्नत तकनीकों के प्रयोग द्वारा मूंग की पैदावार को 20 से 50 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है।

उन्नत किस्में

किस्म	पकने की अवधि (दिनों में)	औसत उपज (कु./है.)	विशेषतायें
आर एम जी –62	65–70	8–9	सिचिंत एवं असिंचित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त। राइजक्टोनिया ब्लाइट, कोण व फली छेदक कीट के प्रति रोधक, फलियां एक साथ पकती हैं।
आर एम जी –268	62–70	8–9	सूखे के प्रति सहनशील। रोग एवं कीटो का कम प्रकोप। फलियाँ एक साथ पकती हैं।
आर एम जी –344	62–72	7–9	खरीफ एवं जायद के लिए उपयुक्त। ब्लाइट को सहने की क्षमता। चकमदार एवं मोटा दाना।
एस एम एल –668	62–70	8–9	खरीफ एवं जायद के लिए उपयुक्त। अनेक बिमारियों एवं रोगों के प्रति सहनशील। पी त शिरा एवं बैक्टीरियल ब्लाइट का प्रकोप कम।
गंगा–8	70–72	9–10	उचित समय एवं देरी दोनों के लिए उपयुक्त, खरीफ एवं जायद दोनों के लिए उपयुक्त। पी त शिरा एवं पत्ती धब्बा, बैक्ट्रीरियल ब्लाइट के लिये प्रतिरोधी।
जी एम –4	62–68	10–12	फलियां एक साथ पकती है। दाने हरे रंग के तथा बड़े आकार के होते हैं।
मूंग के – 851	70–80	8–10	सिचिंत एवं असिचिंत क्षेत्रों के लिए उपयुक्त। दाना मोटा एवं चमकदार।

भूमि एवं तैयारी

मूंग की खेती के लिए दोमट एवं बलुई दोमट भूमि सर्वोत्तम होती है। भूमि में उचित जल निकास की उचित व्यवस्था होनी चाहिये। पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल या डिस्क हैरो चलाकर करनी चाहिये तथा फिर एक क्रौस जुताई हैरो से एवं एक जुताई कल्टीवेटर से कर पाटा लगाकर भूमि समतल कर देनी चाहिये।

बीज एवं बुवाई

मूंग की बुवाई 15 जुलाई तक कर देनी चाहिए। देरी से वर्षा होने पर शीघ्र पकने वाली किस्मों की बुवाई 30 जुलाई तक की जा सकती है। स्वस्थ एवं अच्छी गुणवत्ता वाला तथा उपचारित बीज बुवाई के काम लेना चाहिये। बुवाई कतारों में करनी चाहिये। कतारों के बीच की दूरी 45 से.मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेन्टीमीटर उचित होती है।

खाद एवं उर्वरक

दलहनी फसल होने के कारण मूंग को कम नाइट्रोजन की आवश्यकता होती है। मूंग के लिए 20 किलो नाइट्रोजन तथा 40 किलो फास्फोरस प्रति हैक्टेयर की आवश्यकता होती है। नाइट्रोजन एवं फास्फोरस की समस्त मात्रा 87 कि.ग्रा. डी.ए.पी. एवं 10 कि.ग्रा. यूरिया के द्वारा बुवाई के समय देनी चाहिये। मूंग की खेती हेतू खेत में दो तीन वर्षों में कम से कम एक बार 5 से 10 टन गोबर या कम्पोस्ट खाद देनी चाहिये। इसके अतिरिक्त 600 ग्राम रोइजोबियम कल्चर को एक लीटर पानी में 250 ग्राम गुड़ के साथ गर्म कर ठंडा होने पर बीज को उपचारित कर छाया में सुखा लेना चाहिये तथा बुवाई कर देनी चाहिये। खाद एवं उर्वरकों के प्रयोग से पहले मिट्टी की जांच कर लेनी चाहिये।

खरपतवार नियंत्रण

फसल की बुवाई के एक या दो दिन पश्चात् तक पेन्डीमैथालीन (स्टोम्प) की बाजार में उपलब्ध 3.30 लीटर मात्रा को 500 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिये। फसल जब 25–30 दिन की हो जाये तो एक गुड़ाई कस्सी से कर देनी चाहिये या इमेजीथाइपर (परसूट) की 750 मि. ली. मात्रा प्रति हैक्टेयर की दर से पानी में घोल बनाकर छिड़काव कर देना चाहिये।

रोग तथा कीट नियंत्रण

दीमक:- दीमक फसल के पौधों की जड़ों को खाकर नुकसान पहुंचाती हैं। बुवाई से पहले अन्तिम जुताई के समय खेत में क्यूनालफोस 1.5 प्रतिशत या क्लोरोपाइरोफोस पाउडर की 20 से 25 किलो मात्रा प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि में मिलानी चाहिये। बोने के समय बीज को क्लोरोपाइरीफोस कीटनाशक की 2 मि.ली. मात्रा से प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित कर बोना चाहिये।

कातरा:- कातरा का प्रकोप विशेष रूप से दलहनी फसलों में बहुत होता है। इस कीट की लट पौधों को आरम्भिक अवस्था में काटकर बहुत नुकसान पहुँचाती है। इसके नियंत्रण हेतु खेत के आस पास कचरा नहीं रहना चाहिये। कातरे की लटों पर क्यूनालफास 1.5 प्रतिशत पाउडर की 20–25 किलो मात्र प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव कर देनी चाहिये।

मोयला, सफदे मक्खी एवं हरा तेला:-ये सभी कीट मूंग की फसल को बहुत नुकसान पहुंचाते हैं। इनकी रोकथाम के लिये मोनोक्रोटोफास 36 डब्ल्यू एस. सी. या मिथाइल डिमेटान 25 ई.सी. या डाईमिथोएट 30 ई.सी. आधा लीटर या मैलाथियोन 50 इ.सी. 1. 25 लीटर को प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिये। आवश्यकतानुसार दोबारा छिड़काव किया जा सकता है।

पत्ती बीटल:- इस कीट के नियत्रंण के लिये क्यूनलफॉस 1.5 प्रतिशत पाउडर की 20–25 कि.ग्रा. मात्रा का प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव कर देना चाहिये।

फलीछेदक:- फली छेदक को नियन्त्रित करने के लिए मोनोक्रोटोफास आधा लीटर या मैलाथियोन या क्यूनालफॉस की एक लीटर मात्रा को प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव या क्यूनालफास 1.5 प्रतिशत पाउडर की 20–25 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव करना चाहिये। आवश्यकता होने पर 15 दिन के अन्दर दोबारा छिड़काव/भुरकाव किया जा सकता है।

रस चूसक कीडे:- मूंग की पत्तियों, तनों एवं फलियों का रस चूसकर अनेक प्रकार के कीडें फसल को हानि पहुंचाते हैं। इन कीड़ों की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 200 एसएल का 500 मि.ली. मात्रा का प्रति हैक्टयर की दर से छिड़काव करना चाहिये। आवश्यकता होने पर दूसरा छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।

चित्ती जीवाणु रोग:- इस रोग के लक्षण पत्तियों, तने एवं फलियों पर छोटे गहरे भूरे धब्बे के रूप में दिखाई देते है। इस रोग की रोकथाम हेतु एग्रिमाइसीन 200 ग्राम या स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 50 ग्राम को 500 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिये।

पीत शिरा मोजेक:- इस रोग के लक्षण फसल की पत्तियों पर एक महीने के अन्तर्गत दिखाई देने लगते हैं। फैले हुए पीले धब्बों के